PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

अलंकार

- अलंकार दो शब्दों 'अलम् (आभूषण)+ कार'(करने वाला)
- अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति अलम् + कृ + धञ् प्रत्यय से हुई है।
- दण्डी के अनुसार-

  काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारन प्रचक्षेत-

  अर्थात काव्य की शोभा बढ़ाने वाले गुण, धर्म को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद

अलंकार को मुख्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया गया है-

1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार 3. उभयालंकार

अलंकार

शब्दालंकार	अर्थालंकार	उभयालंकार
अनुप्रास	उपमा	
यमक	रुपक	
श्लेष	उत्प्रेक्षा	
वक्रोक्ति	मानवीकरण	
वीप्सा या पुनरुक्ति प्रकाश	विरोधाभाष	
पुनरुक्ति	संदेह	
पुनरुक्तवदाभास	अतिशयोक्ति	
	भ्रांतिमान	
	विभावना	
	अन्योक्ति	

1. शब्दालंकार -जहाँ शब्दों के प्रयोग से काव्यो में शोभा उत्पन्न हो वहाँ पर शब्दालंकार होता है। शब्दालंकार के कुल 7 भेद हैं।

2. अर्थालंकार- जहाँ पर अर्थ के आधार पर काव्य में शोभा उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार होता है। अर्थालंकारों की संख्या निश्चित नहीं है मुख्य अर्थालंकार है- उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, विरोधाभाष, संदेह, अतिशयोक्ति, भ्रांतिमान, विभावना, अन्योक्ति।

3. उभयालंकार- जहाँ शब्द और अर्थ दोनों के आधार पर काव्य में शोभा उत्पन्न हो वहाँ उभयालंकार होता है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

शब्दालंकार

1. अनुप्रास
2. यमक
3. श्लेष
4. वक्रोक्ति
5. वीप्सा

1. अनुप्रास अलंकार (शब्दालंकार)

- अनुप्रास दो शब्दों 'अनु (बार-बार) + प्रास' (वर्ण' या 'अक्षर)
- जहाँ एक ही वर्ण या अक्षर की बार-बार आवृत्ति होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे -

तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाएँ।

इस पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति 5 बार हुई है। अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

अन्य उदाहरण-

1. मुदित महीपति मंदिर आये।
   सेवक सचिव सुंमत बुलाए

इस पंक्ति में म वर्ण की आवृत्ति हुई है।

2. बँदऊँ गुरु पद पदुम परागा।
   सुरुचि सुबास सरस अनुरागा॥

इस पंक्ति में प, द, स, र, ग, ब वर्गों की आवृत्ति हुई है

3. सेस महेश गनेश दिनेस, सुरेसह जाहि निरंतर गावै।

(इस पक्ति में ग, न, र, स, श, ह वर्गों की आवृत्ति हुई है।

4. रघुपति राघव राजा राम
   पतीत पावन सीता राम

इस पंक्ति में र, घ, प, व वर्गों की आवृत्ति हुई है

5. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि।
   कहत लखन सन राम हदय मुनि।।

यहाँ क, स, न वर्षों की आवृत्ति हुई है।

6. तरनि तनुजा तट समाल तरुवर बहु छाएँ।

झुके कूल सो जल घर मन हित मनहुँ सुहाएं

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

इस पंक्ति में 'त' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

- नोट- यदि प्रश्न में पूछा जाए कि दूसरी पंक्ति में कौन-सा अलंकार है तो इसका सही उत्तर उत्प्रेक्षा अलंकार होगा।

अनुप्रास अलंकार के भेद (5 भेद)

1. छेकानुप्रास
2. वृत्यानुप्रास
3. लाटानुप्रास
4. श्रुत्यानुप्रास
5. अन्त्यानुप्रास

1. छेकानुप्रास अलंकार

- जहाँ कोई वर्ण केवल दो बार आये, वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होगा। छेक का अर्थ है- चतुर

जैसे -

1. रीझिरझिरहसि रहसि हसि हसि उठे।
   साँसे भरि आँसू भरि कहत दई दई।।

स्पष्टीकरण- यहाँ रीझिरीझि, रहसि रहसि, हँसि हँसि में छेकानुप्रास अलंकार है, क्योंकि यहाँ पर वर्ण स्वरूप और क्रम से एक बार दुहराया गया है।

2. बन्दऊँ गुरु पद पदुम परागा।
   सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

स्पष्टीकरण- यहाँ 'पद' में 'प' के बाद 'द' और पुनः 'पदुम' में 'प' के बाद 'द' स्वरूप और क्रम से एक बार दुहराया गया है।

3. इस करुणा कलित हृदय में
   क्यों विकल रागिनी बजती है।

स्पष्टीकरण- इस पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति एक बार स्वरूप एवं क्रम से हुई है

4. कंकन किंकिन नुपुर धुनि सुनि।
   कहत लखन सन राम हृदय गुनि।। - यहाँ 'क' वर्ण की आवृत्ति है

5. राधा के वर वैन सुनि, चीनी चकित सुभाय।
   दाख दुखी मिसरी मुरी, सुधा रही सकुचाय।। - यहाँ 'द' और 'ख' वर्ण की आवृत्ति है

6. अमिय मूरिमय चूरन चारु,
   समन सकल भव रुज परिवारु। - यहाँ 'च' और 'स' वर्ण की आवृत्ति है

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

2. वृत्यानुप्रास अलंकार

- जहाँ एक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति एक या अनेक बार हों, वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार होता है।

जैसे -

1. मुदित महीपति मंदिर आये
   सेवक सचिव सुमंत बुलाये।

स्पष्टीकरण- यहाँ म, द, त, स, व वर्णों की आवृत्ति अनेक बार बिना स्वरूप एवं क्रम के हुई है अतः यह वृत्यानुप्रास अलंकार है।

2. सेस गनेश महेश दिनेश, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावै।

स्पष्टीकरण- यहाँ स, श, न, ह, र की आवृत्ति अनेक बार हुई है

3. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए

स्पष्टीकरण- यहाँ पर 'त' वर्ण की आवृत्ति अनेक बार हुई है।

3. लाटानुप्रास अलंकार

- जहाँ शब्द या वाक्य खण्ड की आवृत्ति उसी प्रकार में हो, परन्तु उसका भावार्थ बदल जाता है, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। लाटानुप्रास अलंकार को 'यमक' अलंकार का 'उल्टा' (विपरीत) अलंकार माना जाता है।

जैसे -

1. वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे।

स्पष्टीकरण- यहाँ पहले मनुष्य शब्द का अर्थ है- इंसान एवं दूसरे मनुष्य शब्द का अर्थ है इंसानियत। अतः भाव परिवर्तन के आधार पर यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

2. पूत सपूत तो क्यों धन संचय?
   पूत कपूत तो क्यों धन संचय?

स्पष्टीकरण- यहाँ पहली पंक्ति का अर्थ है - अगर पुत्र सभ्य है तो धन जोड़ने की जरूरत नहीं क्योंकि वह खुद कमा सकता है। जबकि दूसरी पंक्ति का अर्थ है - अगर पुत्र असभ्य है तो धन जोड़ने से कोई फायदा नहीं वो सब बर्बाद कर डालेगा।

4. श्रुत्यानुप्रास अलंकार

- जब एक ही वर्ग के वर्णों की आवृत्ति होती है या जब एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों की लगातार आवृत्ति होती है तो वहाँ पर श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

जैसे -

दिनान्त था, थे दीननाथ डूबते,

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे

स्पष्टीकरण- यहाँ पर 'त' वर्ग के वर्णों अर्थात् त, थ, द, न की आवृत्ति हुई है जिनका उच्चारण स्थान दंत्य है।

5. अन्त्यानुप्रास अलंकार

- जहाँ पद के अन्त में तुकबंदी मिलती हो, वहाँ पर अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है। अन्त्यानुप्रास को तुकान्त अलंकार भी कहते हैं।

जैसे -

1. जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
   जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
2. रघुकुल रीति सदा चलि आई,
   प्राण जाये पर वचन न जाई।

2. यमक (शब्दालंकार)

- यमक' शब्द का अर्थ होता है- 'दो' या 'जोड़ा।
- जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए और उसका अर्थ अलग-अलग हो वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे -

1. कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
   वा खाये बौराय नर, या पाये बौराय॥

स्पष्टीकरण- यहाँ पर कनक शब्द दो बार आया है, जिसमें पहले 'कनक' शब्द का अर्थ है 'धतूरा' और दूसरे 'कनक' शब्द का अर्थ है 'सोना'।

2. तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।

स्पष्टीकरण- यहाँ 'बेर' शब्द दो बार आया है। पहले 'बेर' शब्द का अर्थ 'खाने वाली बेर' से है जबकि दूसरे 'बेर' शब्द का अर्थ पहर या समय है।

3. काली घटा का घमंड घटा।

स्पष्टीकरण- यहाँ 'घटा' शब्द दो बार आया है जिसमें पहले 'घटा' शब्द का अर्थ 'बादल' से तथा दूसरे 'घटा' शब्द का अर्थ 'कम होना' है।

4. कहैं कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लीनी,
   रति-रति सोभा रति के शरीर की।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

स्पष्टीकरण- पहली पंक्ति में 'बेनी' शब्द दो बार आया है जिसमें पहले 'बेनी' शब्द का प्रयोग 'कवि के नाम के लिए' हुआ है जबकि दूसरे 'बेनी' शब्द का अर्थ 'चोटी' है।

5. माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।

स्पष्टीकरण- पहले मनका का अर्थ - माला में पिरोया जाने वाला दाना, दूसरे मनका - हृदय से

6. जेते तुम तारे, तेरे नभ में न तारे है।

स्पष्टीकरण- पहले तारे- उद्धार किया , दूसरे तारे - सितारे)

7. सजना है मुझे सजना के लिए।

स्पष्टीकरण- पहले सजना- शृंगार करना , दूसरे सजना- पति

8. खग कुल कुल-कुल सा बोल रहा।
किसलय का अंचल डोल रहा।

स्पष्टीकरण- पहले कुल- , दूसरे कुल-

3. श्लेष अलंकार (शब्दालंकार)

- श्लेष का अर्थ है- 'चिपका हुआ'। अर्थात् जहाँ कोई शब्द एक ही बार आया हो लेकिन उसका एक से अधिक अर्थ निकले वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे -

1. रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून॥

स्पष्टीकरण- यहाँ 'पानी' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया गया है।

(i) पहले 'पानी' का अर्थ है- चमक (मोती के संदर्भ में)

(ii) दूसरे 'पानी' का अर्थ है- प्रतिष्ठा या इज्जत (मानुस के संदर्भ में)

(iii) तीसरे 'पानी' का अर्थ है- जल (चून के संदर्भ में)

2. चरन-धरत चिंता करत, चितवत चारहुँ ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर॥

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त दोहे में 'सुबरन' शब्द का प्रयोग एक बार किया गया है, जिसे कवि, व्यभिचारी और चोर तीनों ढूंढ रहे हैं, किन्तु यहाँ 'सुबरन' शब्द के तीन अर्थ हैं-

(i) 'कवि' के संदर्भ में 'सुबरन' का अर्थ है- 'अच्छे शब्द'

(ii) 'व्यभिचारी' के संदर्भ में सुबरन' का अर्थ है- 'सुन्दर रूप'

(ii) 'चोर' के संदर्भ में 'सुबरन' का अर्थ है- 'सोना'

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

3. चिरजीवौ जोरी जुरे, क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर॥

स्पष्टीकरण- यहाँ 'वृषभानुजा' और 'हलधर' में श्लेष अलंकार है। यहाँ 'वृषभानुजा' से वृषभानु की बेटी 'राधा' और वृषभ की बहन 'गाय' का तथा 'हलधर' से कृष्ण और बैल का अर्थ निकलता है।

4. ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।

स्पष्टीकरण-

(i) 'ढोल' के संदर्भ में ताड़ना का अर्थ है- ढोल को कसना।

(ii) 'गँवार' के संदर्भ में ताड़ना का अर्थ है- समझाना।

(iii) 'शूद्र' के संदर्भ में ताड़ना का अर्थ है- डाँटना।

(iv) 'पशु' के संदर्भ में ताड़ना का अर्थ है- मारना।

(v) 'नारी' के संदर्भ में ताड़ना का अर्थ है- वश में रखना।

5. मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाई परै श्याम हरित दुति होय।

स्पष्टीकरण-

(i) झाई- 1. आँखों के नीचे काला होना 2. राधा की परछाई।

(ii) श्याम हरित- 1. तुलसी की पत्तियाँ 2. कृष्णजी का प्रसन्न होना

4. वक्रोक्ति अलंकार (शब्दालंकार)

- जहाँ वक्ता [बोलने वाला] के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता [सुनने वाला] अलग अर्थ निकाले, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। वक्रोक्ति अलंकार के दो भेद होते हैं।

1. श्लेष वक्रोक्ति अलंकार
2. काकु वक्रोक्ति अलंकार

1. श्लेष वक्रोक्ति अलंकार- जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता (बोलने वाला] के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाए, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे -

को तुम हो? इत आए कहाँ?
'घनश्याम' है, तो बरसो कित जाय।

स्पष्टीकरण - कृष्ण राधा के यहाँ गये और उनका बंद दरवाजा खटखटाया। भीतर से आवाज आती है - कौन हो तुम? यहाँ क्यों आये हो ? अपना नाम बताते हुए कृष्ण जी ने कहा - मैं

घनश्याम हूँ। (घनश्याम - काले बादल) तो राधा ने कहा - यदि घनश्याम हो तुम्हारा यहां क्या काम है, कहीं जाकर बरसो।

1. काकु वक्रोक्ति अलंकार- जब वक्ता [बोलने वाला] के द्वारा बोले गए शब्दों का उसकी कंठ ध्वनि के कारण श्रोता [सुनने वाला] कुछ और अर्थ निकाले तो वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे-

आये हू मधुमास के प्रियतम ऐहैं नाहिं।

आये हू मधुमास के प्रियतम ऐहैं नाहि?

स्पष्टीकरण - कोई विरहिणी कहती है कि बसन्त आने पर भी प्रियतम 'नहीं आयेंगे।' सखी उन्ही शब्दों द्वारा कल्पित करती है कि क्या प्रियतम नहीं आयेगे?

5. वीप्सा अलंकार (शब्दालंकार)

- 'वीप्सा' अलंकार को 'पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार' भी कहा जाता है।
- जब आदर, हर्ष, शोक, विस्मयादिबोधक भावों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए शब्दों की पुनरावृत्ति की जाती है तो उसे वीप्सा अलंकार कहते हैं। या जिस काव्य में एक ही शब्द एक से अधिक बार आए किन्तु उनका अर्थ एक ही हो उसे वीप्सा अलंकार कहते हैं।

जैसे -

1. मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।
   राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी॥
2. सूरज है जग का बुझा-बुझा।
3. धरती ने खिलाये है ज्वलंत लाल-लाल।

अर्थालंकार

1. उपमा अलंकार (अर्थालंकार)

- उपमा अलंकार दो शब्दों 'उप('समीप')+मा'(मापना या तुलना करना)
- जब किसी व्यक्ति या वस्तु(उपमेय) की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु(उपमान) से की जाती है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।
- इसे 'प्रतीप' अलंकार का उल्टा (विपरीत) अलंकार कहते हैं।
- उपमा अलंकार के अंग- उपमा अलंकार के 4 अंग होते हैं-

1. उपमेय 2.उपमान 3.साधारण धर्म 4.वाचक शब्द

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

उपमेय- जिसकी उपमा दी जाए अर्थात् जिसकी तुलना की जाए उसे उपमेय कहते हैं।

उपमान- जिससे उपमा दी जाए अर्थात् जिससे तुलना की जाए उसे उपमान कहते हैं।

साधारण धर्म- दो व्यक्तियों या वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जिस गुण या धर्म की सहायता ली जाती है, गुण या धर्म दोनों में विद्यमान हो, उसे साधारण धर्म कहते हैं।

वाचक शब्द- उपमेय और उपमान में समानता या तुलना प्रकट करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसे वाचक शब्द कहते हैं।

जैसे-

सा, सी, से, सो, समान, सदृश, सरिस , सम, तुल्य, इमि, जिमि, ज्यों, जैसा, जैसी, जैसे, नाई, की तरह, के जैसा, के समान आदि।

(जिस वाक्य में उपर्युक्त वाचक शब्द आए हो, वहाँ उपमा अलंकार होता है।)

उपमा अलंकार के भेद-उपमा अलंकार के तीन भेद होते हैं-

1. पूर्णोपमा अलंकार
2 लुप्तोपमा अलंकार
3.मालोपमा अलंकार

1. पूर्णोपमा अलंकार- जब वाक्य में उपमा अलंकार के चारों अंग उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और वाचक उपस्थित रहते हैं तो उसे पूर्णोपमा अलंकार कहते हैं।

जैसे-

पीपर पात सरिस मन डोला

स्पष्टीकरण- दी गई पंक्ति में 'मन' उपमेय है, 'पीपर पात' उपमान है, 'डोला' साधारण धर्म है तथा 'सरिस' वाचक शब्द है।

2. लुप्तोपमा अलंकार- जब वाक्य में उपमा अलंकार के चारों अंग में से किसी एक की भी कमी रहती है, तो वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है।

जैसे-

मखमल के झूल पड़े, हाथी सा टीला।

स्पष्टीकरण- दी गई पंक्ति में 'टीला' उपमेय है, 'हाथी' उपमान है, 'सा' वाचक शब्द है, किन्तु इसमें साधारण धर्म का अभाव है

3. मालोपमा अलंकार- यदि एक उपमेय के लिए एक से अधिक उपमान आ जाये या किसी एक उपमेय की एक से अधिक उपमान के साथ तुलना करा दी जाए तो ऐसी स्थिति में वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

जैसे -

काम-सा रूप, प्रताप दिनेश-सा।

सोम-सा शील राम महीप का॥

स्पष्टीकरण- यहाँ 'राम' उपमेय है। जिनकी तुलना क्रमशः कामदेव, सूर्य एवं देवता सोम से की जा रही है। यहाँ कामदेव, सूर्य एवं देवता सोम उपमान है। एक से अधिक उपमान होने के कारण यहाँ मालोपमा अलंकार है।

उपमा अलंकार के अन्य उदाहरण-

1. काम-सा रूप, प्रताप दिनेश-सा
   सोम-सा शील है राम महीप का।
2. हरिपद कोमल कमल से।
3. पीपर पात सरिस मन डोला।
4. हाय फूल-सी कोमल बच्ची,
   हुई राख की थी ढेरी।
5. "यह देखिए अरविन्द से शिशु वृंद कैसे सो रहे।"
6. दीप-सा मन जल चुका है।
7. सागर-सा गंभीर हृदय हो,
   गिरि-सा ऊँचा हो जिसका मन
8. मोम-सा तन घुल चुका है।
9. "खिली हुई हवा आई फिरकी सी आई, चल गई।"

2. रूपक अलंकार (अर्थालंकार)

- जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे, वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् जहाँ उपमेय में ही उपमान का अभेद आरोप या निषेध रहित आरोप कर दिया गया हो वहाँ रूपक अलंकार होता है।
- नोट- रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान के मध्य योजक चिन्ह (-) लगा रहता है।

जैसे -

1. "मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों।"

स्पष्टीकरण- यहाँ पर चन्द्र अर्थात् चन्द्रमा (उपमेय) पर खिलौना (उपमान) का आरोप लगाया गया है

2. उदित उदय गिरि-मंच पर रघुबर बाल पतंग।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

बिकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन-भंग॥

स्पष्टीकरण- पंक्ति में उदयगिरि पर मंच का, रघुवर (राम) पर बाल पतंग का, संत पर सरोज का, लोचन (नेत्र) पर भृग (भ्रमर) का अभेद आरोप होने के कारण यहाँ रूपक अलंकार है।

3. चरण-कमल बंदी हरिराई

स्पष्टीकरण- यहाँ चरण (उपमेय) को कमल (उपमान) मान लिया गया है अर्थात् चरण (उपमेय) पर कमल (उपमान) का अभेद आरोप है।

4. "संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।"

5. "अम्बर-पनघट में डुबो रही, तारा-घट ऊषा नागरी।"

6. "मन-सागर, मनसा लहरि, बूड़े-बहे अनेक।"

7. पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।"

3. उत्प्रेक्षा अलंकार (अर्थालंकार)

- जहाँ उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए अर्थात जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
- उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान वाचक शब्दों[जनु, जानो, जनहु, मनु, मानों, मनहुँ, मानहुँ, जान पड़ता है, निश्चय ही, ज्यों, मकु, इव, इच्छा से) से की जाती है यदि इनमें से कोई भी वाचक शब्द दी गई पंक्तियों में पाया जाए तो वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होगा।

जैसे -

1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
   मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप परयौ प्रभात।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से राधा जी भगवान श्रीकृष्ण के शरीर में नीलमणि पर्वत की तथा उनके पीले वस्त्रों में प्रात: कालीन सूर्य की किरणों की संभावना अथवा कल्पना करती है। इनमें वाचक शब्द मनहुँ भी आया है

2. सखिन्ह सहित हरषी अति रानी।
   सूखत धातु पराजनु पानी॥

3. 'ले चला साथ मैं तुझे कनक ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण झनक।'

4. 'अति कटु वचन कहति। मानहुँ लोनजरे पर देई।'

5. उस काल मारे क्रोध के, तन काँपने उसका लगा।
   मानों हवा के जोर से, सोता हुआ सागर जगा॥

6. मेरा मन अनंत कहाँ सुख पावै,

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिर जहाज पर आवै।

7. सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
   देखन में छोटे लगैं, घाव करें गम्भीर॥
8. रहिमन पुतरी श्याम की मनहुँ जलज मधुकर लसै।
9. 'कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
   हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए॥"

4. अतिशयोक्ति अलंकार (अर्थालंकार)

- अतिशयोक्ति का अर्थ 'अतिशय(बढ़ा-चढ़ाकर) + उक्ति'(कथन)
- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन लोक सीमा या मर्यादा से अधिक बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे -

1. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
   राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार॥

स्पष्टीकरण- पंकित अर्थ राणा अभी नदी पार करने के बारे में सोच ही रहे थे कि तब तक घोड़ा नदी के पार हो गया। अर्थात् यहाँ बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहे जाने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

2. हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
   लंका सगरी जल गई, गये निशाचर भाग।।

स्पष्टीकरण- पंक्ति में कहा गया है कि अभी हनुमान जी की पूँछ में आग भी नहीं लगी उसके पहले ही लंका जल गई और सारे राक्षस भाग गये। यहाँ भी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने के कारण अतिशयोक्ति अलंकार है।

5. विभावना अलंकार (अर्थालंकार)

- विभावना शब्द का अर्थ - विशेष प्रकार की कल्पना
- जहाँ बिना कारण (साधन) के ही कार्य का होना पाया जाए या जहाँ बिना कारण (साधन) के ही कार्य की संभावना व्यक्त की जाय वहाँ विभावना अलंकार होता है।

जैसे -

1. बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
   कर बिनु करम करै बिधि नाना॥

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

स्पष्टीकरण- यहाँ बिना पैर चलने, बिना कान सुनने, बिना हाथ काम करने आदि का वर्णन किया गया है अर्थात् बिना कारण के ही कार्य होने की बात कही जा रही है। अतः यहाँ विभावना अलंकार है।

2. आनन रहित सकल रस भोगी।
   बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी॥
3. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
   बिनु पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय।।

6. संदेह अलंकार (अर्थालंकार)

- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे अर्थात् निश्चय न हो सके वहाँ संदेह अलंकार होता है।
- संदेह अलंकार के उदाहरणों में प्रायः 'या', 'अथवा', 'कि', 'कै', 'कैधों' आदि शब्द मिलते है।

जैसे -

1. सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है।
   कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है।।
2. यह मुख है या चन्द्र है।
3. यह काया है या शेष उसी की छाया है।

7. भ्रांतिमान अलंकार (अर्थालंकार)

- जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाए या जहाँ एक वस्तु (उपमेय) को देखकर दूसरी वस्तु (उपमान) का भ्रम हो जाए वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।
- भ्रांतिमान अलंकार के उदाहरणों में प्रायः 'भ्रम', 'भ्रांति', 'जानि', 'मानि', 'समुझि' आदि शब्द मिलते है जैसे-

1. नाक का मोती अधर की कांति से,
   बीज दाडिम का समझकर भ्रांति से।
   देख उसको ही हुआ शुक मौन है,
   सोचता है अन्य शुक यह कौन है॥
2. "जानि श्याम घनश्याम को नाचि उठे वन मोर।"
3. वृन्दावन विहरत फिरै राधा नन्द किशोर।
   नीरद दामिनी जानि संग डोलै बोले मोर॥

8. अन्योक्ति अलंकार (अर्थालंकार)

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

- अन्योक्ति दो शब्दों 'अन्य(दूसरा)+उक्ति'(कथन) से मिलकर बना है।
- जहाँ किसी की उक्ति कथन या बात के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।
- इस अलंकार को बनाने के लिए कुछ प्रतीक चिह्नों जैसे - फूल, कली, माली, गुलाब, काँटा, डाली, अलि (भौंरा), पक्षी का प्रयोग किया जात है। इन प्रतीक चिह्नों के बिना अन्योक्ति अलंकार का निर्माण नहीं किया जा सकता।

  जैसे -

  1. नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
     अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल।।

  स्पष्टीकरण- पंक्ति में भौरे को प्रताड़ित करने के बहाने कवि ने राजा जयसिंह की काम-लोलुपता पर व्यंग्य कसा है।

9. मानवीकरण अलंकार (अर्थालंकार)

- जिस काव्य में जड़ (निर्जीव) पर चेतन (सजीव) का आरोप होता है, अर्थात् जहाँ निर्जीव वस्तु का वर्णन सजीव वस्तु की तरह किया गया हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

  जैसे -

  1. "देख दशा रघुवीर की, वृक्ष फूट-फूट कर रोये।"

10. विरोधाभास अलंकार (अर्थालंकार)

- जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

  जैसे -

  1. सुलगी अनुराग की आग वहाँ,
     जल से भरपूर तड़ाग वहाँ।
  2. "पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते।"
  3. या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
     ज्यों-ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥
  4. जब से है आँख लगी तब से न आँख लगी।

11. प्रतीप अलंकार (अर्थालंकार)

- प्रतीप शब्द का अर्थ - 'उल्टा' अर्थात् जहाँ उपमान की तुलना उपमेय से हो, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। या जहाँ उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताया जाय, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। 'प्रतीप' अलंकार को 'उपमा' अलंकार का उल्टा (विपरीत) अलंकार कहते हैं।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090

जैसे -

1. 'उस तपस्वी से लम्बे थे देवदार दो-चार खड़े'

स्पष्टीकरण- यहाँ उपमान (देवदार) को उपमेय तथा उपमेय (तपस्वी) को उपमान मानकर वर्णन किये जाने के कारण प्रतीप अलंकार है।

2. उतरि नहाए जमुन जल जो शरीर सम स्याम।

स्पष्टीकरण- यहाँ उपमान (जमुन जल) को उपमेय तथा उपमेय (शरीर) को उपमान मानकर वर्णन किये जाने के कारण प्रतीप अलंकार है।

12. प्रश्न अलंकार (अर्थालंकार)

- जिस काव्य में प्रश्न किया गया हो व प्रश्न वाचक चिह्न का प्रयोग किया गया हो, वहाँ प्रश्न अलंकार होता है।

जैसे-

"कौन रोक सकता है उसकी गति?

गरज उठते जब मेघ, कौन रोक सकता विपुल नाद?"

13. असंगति अलंकार(अर्थालंकार)

- जिस काव्य में कारण और कार्य का मेल न हो अर्थात संगति न हो, वहाँ असंगति अलंकार होता है।

जैसे -

1. दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत।
   परत गाँठ दुरजन हिए, दई नयी यह रीति॥

स्पष्टीकरण - यहाँ उलझती है आंखें, पर टूटता है कुटुम्ब से सम्बन्ध, फिर जो चीज टूटती है, वही पीछे जुड़ती है, यहाँ टूट तो रहा है कुटुम्ब पर जुड़ रहा है चतुरों के हृदय का प्रेम।

2. हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै।।

14. करणमाला (अर्थालंकार)

- जहाँ एक कारण से उत्पन्न कार्य, किसी अन्य कार्य का कारण बन जाये, वहां करणमाला अलंकार होता है।

जैसे -

आकर्षण से प्रेम, प्रेम से मोह उपजता भारी।

स्नेह-रज्जु में बँध जाते हम, बन जाते संसारी।।

स्पष्टीकरण - यहाँ एक कारण से जो कार्य हुआ वही क्रमशः अन्य का कारण बनता चला गया।

PDF प्राप्त करने के लिए Telegram channel link –https://t.me/paonehmr9090

15. व्याजस्तुति (अर्थालंकार)

- जहाँ देखने या सुनने मे निन्दा प्रतीत हो परन्तु वास्तव मे प्रशंसा की जा रही हो।

जैसे -

काशी पुरी की कुरीति महा,
जहाँ देह देए, पुनि देह न पाइए।

स्पष्टीकरण - वास्तव मे काशी की प्रशंसा की जा रही है, क्योंकि वहाँ देह त्यागने पर मुक्ति मिलती है।

16. व्याजनिन्दा (अर्थालंकार)

- जहाँ पर की जाय स्तुति, पर वास्तव मे निन्दा हो रही हो।

जैसे -

नाक-कान बिनु भगिनि निहारी।
क्षमा कीन्ह तुम धरम - बिचारी।।

स्पष्टीकरण - यहाँ देखने मे रावण की प्रसंशा की जा रही है, पर वास्तव मे वहां निन्दा है।

17. विशेषोक्ति अलंकार (अर्थालंकार)

- जहाँ कारण (साधन) के रहते हुए भी कार्य का न होना पाया जाए अर्थात् जहाँ कार्यसिद्धि के समस्त कारणों (साधनों) के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो सके वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है।

जैसे -

1. पानी विच मीन प्यासी।
मोहि सुनि सुनि आवै हासी॥

स्पष्टीकरण- यहाँ पानी (कारण) में रहते हुए भी मछली के प्यासे रह जाने की बात की जा रही है। अतः यहाँ विशेषोक्ति अलंकार है।

2. देखो दो-दो मेघ बरसते मैं प्यासी की प्यासी।

YouTube - PAONE9090 Telegram - PAONE9090 Twitter - PAONE9090 WhatsApp – 90-2696-9090